1.1 प्रस्तावना

भारतीय नाट्य एवं नाट्यशास्त्र के अन्तर्गत उत्तररामचरित के विश्लेषण से सम्बन्धित यह प्रथम इकाई है। इसमें आप भवभूति एवं उनकी कृतियों का सामान्य परिचय प्राप्त करेंगें।

करुणावतार महाकवि भवभूति संस्कृत नाटककारों की प्रथम पंक्ति में गिने जाते हैं। बाह्य जगत् के सौन्दर्य पर मुग्ध विद्वान् नाट्य के क्षेत्र में भी कालिदास को प्राथमिकता प्रदान करते हैं, परन्तु आन्तरिक सौन्दर्य को पहचानने वालों की दृष्टि में भवभूति का स्थान विश्व के समस्त कलाकारों से आगे है।

भवभूति की तीन रचनाएँ उपलब्ध है। ये तीनों रूपक हैं जिनमें प्रथम मालती माधव एक प्रकरण है । इसमें मालती और माधव नामक दो प्रेमियों की कथा निबद्ध है । दूसरा महावीर चरित नाटक है जिसमें राम के प्रारम्भिक जीवन से लेकर राज्याभिषेक तक की कथा चित्रित की गई है। तीसरा उत्तर रामचरित नाटक, राम के राज्याभिषेक के बाद से लेकर सीता निर्वासन की मुख्य घटना पर आधारित है ।

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप महाकवि भवभूति के जीवनवृत्त और समय आदि को समझा सकेंगे तथा उनकी कृतियों का सम्यक् विवचेन कर सकेंगे।

1.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप भवभूति के

- जीवन वृत्त से अवगत हो सकेंगे।
- स्थितिकाल को समझ सकेंगे।
- व्यक्तित्व से परिचित हो सकेंगें।
- पाण्डित्य को समझ पायेंगे।
- मालतीमाधव प्रकरण को समझ सकेंगे ।
- मालतीमाधव में प्रेम और सौन्दर्य की अनुभूति कर सकेंगे ।
- महावीरचरित की वस्तुयोजना को समझा सकेगे ।
- महावीरचरित की कथावस्तु का औचित्य जान सकेंगे ।
- उत्तररामचरित की कथावस्तु को समझ सकेंगे ।
- उत्तररामचरित की विषयवस्तु का विश्लेषण कर सकेगे ।

1.3 भवभूति: एक परिचय

संस्कृत साहित्य की यह परम्परा रही है कि कवि या लेखक अपना परिचय नहीं देते रहे है। जिसने दिया भी वह संक्षिप्त ही और उसके आधार पर उसके जीवन चरित तथा समय पर सम्यक् प्रकाश नहीं पड़ता। परन्तु भवभूमि के सम्बन्ध में वैसी बात नहीं है। अपने रूपकों की प्रस्तावना में उन्होंने अपने कुल, गुरु और पाण्डित्य आदि का संक्षिप्त परिचय दिया है। यहाँ आप भवभूति के जीवन वृत्त, स्थितिकाल तथा पाण्डित्य का विहंगम अवलोकन करेंगे।

1.3.1 जीवनवृत्त

करुणा के उत्पूर तटाक से करुण रस को निर्बाध प्रवाहित करने वाले भवभूति ने अपने विषय में महावीर चरित तथा मालतीमाधव की प्रस्तावनाओं में स्पष्ट संकेत किया है। इनका जन्म कश्यप वंश के उदुम्बर नामक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पूर्वज कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा को पढ़ने वाले आहिताग्नि थे। वे विदर्भ देश के अन्तर्गत पΰपुर नामक नगर के निवासी थे। इनके पूर्वजों ने वाजपेय और सोमयाग जैसे बडे-बडे यज्ञ किये थे। ये लोग अपने समय में प्रचलित सभी विद्याओं के प्रकाण्ड विद्वान् थे। भवभूति ने अपने पांचवे पूर्वज का महाकवि नाम से निर्देश किया है। यह महाकवि नाम पितृकृत न होकर कार्यकृत प्रतीत होता है, जिससे सिद्ध होता है कि भवभूति को विद्या और कविता दोनो पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हुई थीं। इनके बाबा का नाम गोपाल भट्ट और पिता का नाम नील कण्ठ था। इन्होंने स्वयं को जतुकर्णी पुत्र लिखा है जिससे स्पष्ट है कि इनकी माता का नाम जतुकर्णी था। इनके पिता ने इनका नाम श्रीकण्ठ रखा था, पर ये काव्य जगत् में भवभूति के नाम से प्रसिद्ध हो गये। इस प्रसिद्धि का कारण इनके द्वारा देवी पार्वती की वन्दना में लिखा गया एक श्लोक था जिसमें इन्होंने पार्वती के स्तनों को भवभूति सितानानौ कहा था।

1.3.2 स्थितिकाल

भवभूति संस्कृत साहित्य जगत् की विलक्षण विभूति हैं। उन्होंने अपने नाटकों में अपना एवं अपने परिवार का पर्याप्त परिचय दिया है, परन्तु अपने जन्म एवं स्थितिकाल की कोई सूचना नहीं दी है। फिर भी उपलब्ध अन्तः एवं बाह्य प्रमाणों के आधार पर उनका काल निर्णय किया जा सकता है।

भवभूति की भाषा-शैली पर बाणभट्ट का प्रभाव दिखाई देता है। भवभूति के तीनों नाटकों में प्रमुखतः मालती माधव में बाणभट्ट की शैली का प्रभाव प्रतीत होता है। बाणभट्ट हर्षवर्धन (606-648 ई0) के दरबारी कवि थे। इसलिए बाणभट्ट का समय सप्तम शताब्दी का पूर्वार्द्ध है। बाणभट्ट ने हर्षचरित के आरम्भ में ही अपने पूर्ववर्ती कवियों एवं ग्रन्थों की चर्चा की है। उनमें भास, कालिदास, सातवाहन, प्रवरसेन एवं आढ्य राज आदि कवियों तथा वासवदत्ता, सेतुबंध तथा बृहत्कथा इत्यादि

ग्रन्थों का उल्लेख किया है। परन्तु भवभूति एवं उनकी कृतियों का संकेत कहीं नहीं किया है । इससे पता चलता है कि भवभूति बाणभट्ट के परवर्ती नाटककार है ।

वामन ने अपने काव्यालंकार सूत्रवृत्ति में भवभूति के पद्यों को उद्धृत किया है। पी.वी.काणे ने अपने उत्तरराम चरित की प्रस्तावना में वामन को 8वीं शताब्दी के आस-पास माना है। राजशेखर (880-920 ई0) ने बाल रामायण में अपने को भवभूति का अवतार माना है ।

कल्हण की राजतरंगणी के अनुसार भवभूति और वाक्पतिराज कान्यकुब्ज (कन्नौज) के राजा यशोवर्मा के राजकवि थे । राजतरिङ्.गणी से ज्ञात होता है कि कश्मीर के राजा ललितादित्य ने यशोवर्मा को पराजित किया था। डॉ0 स्टोन ने इस घटना को 736 ई0 के आस-पास निर्धारित किया है। यशो वर्मा के आश्रित वाक्पतिराज और भवभूति भी इसी समय होने चाहिए । वाक्पतिराज ने एक 'गउडवहो' नामक प्राकृतगाथा काव्य लिखा है, जिसमें उन्होंने भवभूति की बड़ी प्रशंसा की है। वाक्पतिराज के इस काव्य का समय इसमें वर्णित एक सूर्य ग्रहण की गणना के अधार पर डॉ0 जैकोवी ने 733 ई0 निर्धारित किया है। निःसन्देह भवभूति इस समय से पूर्व ही रहें होंगे। इस प्रकार भवभूति के समय की पूर्व सीमा 606 ई0 और परसीमा 733 ई0 निर्धारित होती है।

1.3.3 पाण्डित्य

'वाग्वैविभूति' के अनन्य आराधक भवभूति अनेक शास्त्रों के मर्मज्ञ थे। इनकी कृतियों में इनके अगाध पाण्डित्य का परिचय प्राप्त होता है। इनके पूर्वज अध्यवसायी एवं धर्मनिष्ठ ब्राह्मण थे । भवभूति की ज्ञान गरिमा का आधार उनका पैतृक संस्कार था। उनके वैदिक एवं दार्शनिक ज्ञान का प्रवाह मालतीमाधव के प्रथम अंक में ही होने लगता हैं, यद्यपि वे इसके निरर्थक पाण्डित्य-प्रदर्शन के पक्ष में नहीं थे। वाणी उनकी जिह्वा पर वशवर्तिनी बनकर रहती थी। उत्तरराम चरित के भरतवाक्य में भी उनको 'शब्दब्रह्मविद्' कहा गया है । शास्त्र सिद्ध होने के साथ ही रससिद्ध कवि बनकर भवभूति ने नाट्य शास्त्र की परम्परा के विपरीत संस्कृत काव्यजगत् में एक नया आयाम स्थापित किया है। करुण को ही अंगीरस स्वीकार किया है एवं अन्य रसों को इनका विवर्तमात्र कहा है। उत्तर रामचरित में प्रयुक्त विवर्त वेदान्त के विवर्तवाद का संकेत देता है ।

मालती माधव के पंचम अंक में योग और दर्शन दोनों का सामंजस्य प्राप्त होता है। मालती माधव के ही नवम अंक में योग दर्शन के व्यावहारिक ज्ञान का उद्गार प्रकट होता है। भवभूति सांख्य दर्शन के अच्छे ज्ञाता थे। उत्तर रामचरित के पंचम अंक में चन्द्रकेतु का यह वचन- 'अपरेऽपि प्राचीनमान सत्व प्रकाशाः स्वयं सर्वं मन्त्रदृशः पश्यन्ति' सांख्य के सत्त्वगुण का परिचायक है । न्यायदर्शन के शब्द निग्रहस्थान' का प्रभाव भी सौधातकि और दाण्डायन के वार्तालाप में देखने को मिलता है ।

भवभूति वैदिक साहित्य में पारंगत थे। उनकी कृतियों में वैदिक ज्ञान का उल्लेख अनेक स्थलों पर प्राप्त होता है। उत्तर रामचरित के द्वितीय अंक में बैराज लोकों का वर्णन ऋग्वेद के मन्त्र के समान ही किया गया है। इसी प्रकार चौथे अंक में ऋग्वेद के मन्त्र का ही अनुसरण है। महावीर चरित के प्रथम एवं द्वितीय अंक में इनकी अथर्ववेद की विद्वता प्रकट होती है। उनकी रचना में वैदिक शैली का प्रभाव परिलक्षित होता है जैसे-'**अरुन्धती-अक्षरं ते ज्योतिः प्रकाश्यताम्। सत्वां पुनातु देवः परो रजसां यः एष तपति।**'उनके नाटकों में औपनिषदिक ज्ञान का प्रभाव एवं मन्त्रों का सप्रसंग प्रयोग प्राप्त होता है। उत्तरामचरित में जनक के कथन '**अन्धतामिस्रा ह्यसूर्या नाम ते लोकाः प्रेत्य तेभ्यः प्रतिविधीयन्ते य आत्मघातिन' इत्येव मृषयो मन्यन्ते।'** में ईशावास्योपनिषद् के मन्त्र का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पडता है। महावीर चरित के प्रथम श्लोक में ही उपनिषदों में वर्णित गूढ तत्वों का सन्निवेश है। उत्तररामचरित के चतुर्थ अंक में अरुन्धती कथनबृहदारण्यकोपनिषद् का स्मरण कराता है। धर्मशास्त्र और राजनीति में निपुणता उनकी रचनाओं में यथासन्दर्भ देखने को मिलती है। उनको वर्णाश्रम व्यवस्था के ज्ञान के साथ ही अतिथि सेवा अनुष्ठान नियम आदि का भी समुचित ज्ञान था। राजनीति में कुशलता का परिचय उत्तररामचरित के पांचवे अंक में देखने को मिलता है; जब दोनों कुमार एक दूसरे को लक्ष्य करके कहते हैं-**''वीराणां समयो हि दारुणरसः स्नेहक्रमं बाधते।''** महाकवि को कामशास्त्र का अच्छा ज्ञान था। मालती माधव में अनेक स्थलों पर कामशास्त्र का प्रभाव दिखाई देता है। सप्तम अंक में बुद्धरक्षिता का कथन '**नववधू विरुद्धरभसोपक्रमस्खलन**' कामसूत्र के नियमों का परिचायक है। उनकी कृतियों में अनेक सूक्तियां उनके नीतिपरक एवं मनोवैज्ञानिक वैशिष्ट्य को प्रमाणित करती है। साथ ही, उन्होंने अपनी कृतियों की प्रस्तावनाओं में अपने को 'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' ठीक ही कहा है अर्थात् वे व्याकरण (पद) मीमांसा (वाक्य) और न्याय (प्रमाण) के विद्वान् थे। इस प्रकार भवभूति विविध शास्त्रों एवं विद्याओं में पारंगत थे।

अभ्यास प्रश्न 1-

1- एक शब्द में उत्तर दीजिएः

क. भवभूति के वंश का नाम है?
ख. भवभूति के जन्म का परिवार है?
ग. भवभूति के पूर्वज किस शाखा के आहिताग्नि है?
घ. वे किस देश के निवासी थे?

2- एक वाक्य में उत्तर दीजिएः

क. भवभूति ने अपने पांचवे पूर्वज का क्या नाम निर्देश किया है?
ख. भवभूति ने स्वयं को किसका पुत्र लिखा है?

ग. भवभूति के पिता ने इनका क्या नाम रखा था?
घ. भवभूति की प्रसिद्धि का कारण किसकी वन्दना में लिखा श्लोक था?

3- रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

क. भवभूति संस्कृत साहित्य जगत् की .... विभूति हैं।
ख. मालती माधव में .... की शैली का प्रभाव प्रतीत होता है।
ग. पी.बी.काणे ने बामन को .... के आस-पास माना है।
घ. भवभूति के समय की परसीमा .... निर्धारित होती है।

4- सत्य/असत्य बताइए:

क. भवभूति बाणभट्ट के परवर्ती नाटककार है।
ख. भवभूति के पिता का नाम नीलकण्ठ था।
ग. भवभूति हर्षवर्धन के दरबारी कवि थे।
घ. वाक्पतिराज राजतरंगिणी के लेखक हैं।

5- सही विकल्प छांटकर लिखिए:

1; 'वाग्वैविभूति के अनन्य आराधक महाकवि हैं।

क. भवभूति
ख. बाणभट्ट
ग. वाक्पतिराज
घ. कालिदास

1.4 भवभूति की कृतियों का सामान्य परिचय

भवभूति की प्रसिद्धि उनकी तीन रचनाओं के कारण ही रही है। उनकी उपलब्ध तीन रचनाओं में ''महावीर चरित'' और उत्तररामचरित'' सात-सात अंकों के नाटक हैं और ''मालती माधव'' दस अंकों का एक प्रकरण। इन रचनाओं के कालक्रम के विषय में विद्वानों में मतभेद है। उत्तररामचरित को प्रायः सभी आलोचक कवि की अन्तिम कृति मानते हैं; किन्तु महावीर चरित और मालती माधव के रचनाक्रम के विषय में पर्याप्त मतभेद है। पण्डित टोडरमल, डॉ0 भण्डारकर, चन्द्रशेखर पाण्डेय आदि महावीर चरित को कवि की प्रथम कृति मानते हैं। कुछ विद्वानों का विचार है कि भवभूति ने अन्य अनेक रचनाएँ की होंगी, जिनका उचित सम्मान नहीं हुआ, तब उन्होंने मालती माधव प्रकरण की रचना की, जिसमें अपने आलोचकों के प्रति उनकी खीज स्पष्ट व्यक्त हुई है; किन्तु

उसका भी अधिक सम्मान नहीं हुआ तब वे महावीर चरित की रचना में प्रवृत्त हुए। इसके बाद भी जब उन्हें यथेष्ट सम्मान नहीं मिला; तब वे उŸ◌ाररामचरित की ओर उन्मुख हुए और प्रारम्भिक आलोचना के बाद अपने जीवन में ही एक उच्च कोटि के कलाकार की ख्याति प्राप्त करने में सफल हुए। उनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

1.4.1 मालती माधव

भवभूति की प्रथम नाट्यकृति मालती माधव है। यह 10 अंको का प्रकरण है। इसमें मालती और माधव के प्रेम की काल्पनिक कथा चित्रित की गई है। भूरिवसु और देवरात क्रमशः पù◌ावती और विदर्भ के राजमन्त्री थे। उन्होंने यह प्रण किया था कि वे अपने पुत्र पुत्रियों का परस्पर विवाह करेंगे। समय पर देवरात के पुत्र और भूरिवसु के पुत्री उत्पन्न हुई। भूरिवसु देवरात के पुत्र माधव के साथ अपनी प्रतिज्ञानुसार मालती का विवाह करना चाहते हैं, परन्तु राजा का साला और मित्र (नर्मसुहृतं) मालती से अपना विवाह करना चाहता है। राजा का समर्थन भी उसे प्राप्त है। माधव का एक साथी मकरन्द है और नन्दन की बहिन मदयन्तिका मालती की सहेली है। मालती और माधव एक शिव मन्दिर में मिलते हैं; वहीं मदयन्तिका को मकरन्द एक सिंह से बचाता है। तभी वे एक दूसरे पर अनुरक्त हो जाते हैं। इधर राजा मालती और नन्दन का विवाह कराने के लिए तैयार है। माधव अपनी प्रेम सिद्धि के लिए श्मशान में तन्त्रसिद्धि कर रहा है कि उसे एक स्त्री की चीख सुनाई पड़ती है। वहाँ जाने पर उसे पता चलता है कि अघोरघण्ट और उसकी शिष्या कपालकुण्डला मालती को चामुण्डा की बलि चढाने का उपक्रम कर रहे हैं। माधव अघोरघण्ट को मारकर मालती को बचा लेता है। राजा के सैनिक ढूंढते हुए श्मशान पहुंचते है और मालती को ले आते हैं। मालती और नन्दन के विवाह की तैयारी की जाती है, परन्तु कामन्दकी (भूरिवसु की शुभ चिन्तिका तापसी) की चतुरता से मकरन्द का विवाह नन्दन से हो जाता है और कामन्दकी शिव मन्दिर में ले जाकर मालती माधव का गन्धर्व विवाह करा देती है। इधर प्रथम मिलन पर मकरन्द नन्दन को पीट देता है। नन्दन वहाँ से चला जाता है। मदयन्तिका अपनी भाभी को समझाने जाती है, पर उसे अपना प्रेमी जानकर उसके साथ भाग जाती है, परन्तु सैनिकों द्वारा मकरन्द पकड़ लिया जाता है। यह सुनकर माधव मालती को छोड़कर अपने मित्र की सहायता करने के लिए चल पड़ता है। इसी बीच अपने गुरु का बदला लेने के लिए कपालकुण्डला मालती को चुराकर श्रीपर्वत पर ले जाती है। उधर सैनिकों और माधव-मकरन्द का भयंकर युद्ध होता है। राजा उनकी वीरता से प्रसन्न होकर उन्हें छोड देता है। माधव मकरन्द के साथ विक्षिप्तावस्था में विन्ध्य पर्वत पर मालती की खोज में घूम रहा है। वहीं कामन्दकी की शिष्या सौदामिनी बताती है कि मालती इसकी कुटिया में सुरक्षित है। इस समाचार को मकरन्द, भूरिवसु, मदयन्तिका आदि को देता है। बाद में मालती माधव के मिलन के साथ ही मकरन्द मदयन्तिका का विवाह सम्पन्न हो जाता है। वस्तुयोजना की दृष्टि से मालती माधव की कथा बहुत विशृंखलित है।

लम्बे-लम्बे समास और संवाद उसकी नाटकीयता में व्याघात उपस्थित करते है। यह प्रकरण महाकवि भास के 'अविमारक' से प्रभावित प्रतीत होता है।

1.4.2 महावीर चरित

यह सात अंकों का नाटक है। इसमें श्री रामचन्द्रजी के राज्याभिषेक तक की घटनाओं का वर्णन है। मालती माधव की अपेक्षा यह नाटक अधिक संगठित है। कवि ने इसमें अनेक कल्पनाएँ की हैं। आरम्भ में ही रावण को सीता विवाह का अभिलाषी चित्रित करके कवि ने नाटक में संघर्ष की अवतारणा कर दी है। रामचन्द्र जी धनुष तोड़कर सीता जी से विवाह करते है। रावण अत्यन्क्रुद्ध होता है, उसका मन्त्री माल्यवान् अपनी कूटनीति का प्रयोग करता है। पहले तो वह परशुराम को राम के विरुद्ध भड़काकर भेजता है पर जब यह युक्ति असफल हो जाती है तब वह सूर्पणखा को मन्थरा वेश में भेजकर कैकयी से राम को वन भेजने का षडयन्त्र करता है। वन में निवास करते समय माल्यवान् ही सीता हरण कराता है और बाली को भड़काता है। बाली राम से युद्ध करने आता है और मारा जाता है। अन्त में राम सुग्रीव की सहायता से लंका पर चढ़ाई करते हैं और रावण वध के अनन्तर पुष्पक विमान से अयोध्या लौट आते हैं।

महावीर चरित मालती माधव से अधिक गठा हुआ होने पर भी वर्णनों की अधिकता, सटीक चरित्र-चित्रण के अभाव एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की न्यूनता के कारण प्रथम श्रेणी का नाटक नहीं कहा जा सकता है।

1.4.3 उत्तररामचरित

यह भवभूति का सर्वश्रेष्ठ नाटक है। इसमें कवि ने अपनी कल्पना का प्रयोग करके अद्भुत सृष्टि की है। सात अंकों में निबद्ध इस नाटक में रामचन्द्र जी के उत्तररामचरित का वर्णन है। इसे महावीर चरित का उत्तरभाग ही समझा जा सकता है। प्रथम अंक में राम को दुर्मुख नामक दूत से सीतापवाद विषयक सूचना मिलती है और वे प्रजारंजन के लिए उनका त्याग कर देते हैं। इसकी भूमिका बड़े ही कौशल से संयोजित की गई है। चित्रदर्शन के अवसर पर स्वयं सीता जी गंगा जी का दर्शन करने की इच्छा व्यक्त करती हैं और गंगादर्शन के लिए उनका जाना अनजाने में ही राम से बिछुड़ जाना होता है। दूसरे अंक का प्रारम्भ 12 वर्ष के बाद होता हैं आत्रेयी नामक तापसी तथा वासन्ती नामक वनदेवी के सम्भाषण से ज्ञात होता है कि राम ने अश्वमेघ यज्ञ प्रारम्भ कर दिया है और महर्षि वाल्मीकि किसी देवता के द्वारा सौंपे गये दो प्रखर बुद्धि बालकों का पालन कर रहे हैं। राम दण्डकारण्य में प्रवेश कर शुद्रमुनि शम्बूक का वध करते हैं। तृतीय अंक में तमसा और मुरला दो नदियों के वार्तालाप से ज्ञात होता है कि परित्यक्त होने के अनन्तर सीता जी प्राण-विसर्जन करने के लिए गंगा जी में कूद पडीं और वहीं उन्होंने लव-कुश को जन्म दिया। गंगा जी ने उनके पुत्रों की रक्षा करके वाल्मीकि जी को समर्पित कर दिया है। आज उनकी बारहवीं वर्षगांठ है, इसलिए भगवती

भागीरथी ने सीताजी को आज्ञा दी है कि वे अपने कुल के उपास्यदेव भगवान् सूर्य की उपासना करें। उन्हें भागीरथी का वरदान है कि उन्हें पृथ्वी पर देवता भी नहीं देख सकते, पुरुषों की तो बात ही क्या है? गंगा जी को यह बात ज्ञात है कि अगस्त्याश्रम से लौटते समय रामचन्द्र जी पंचवटी के दर्शन अवश्य करेंगे, कहीं ऐसा न हो के पूर्वानुभूत दृश्य का स्मरण कर वे विक्षिप्तचित्त हो जायें। इसलिए उन्होंने सीता जी को राम का दर्शन करने की योजना बनाई है और उनकी देखरेख के लिए उन्होंने (तमसा) को उनके साथ भेजा है। इसके अनन्तर भगवान् रामचन्द्र जी का प्रवेश होता है। वे पंचवटी प्रवेश में वनदेवी वासन्ती के साथ पूर्वानुभूत दृश्यों को देखकर सीता की स्मृति से अत्यन्त व्याकुल होते हैं। सीता अदृश्य रूप में उन्हें स्पर्श करके प्रबुद्ध करती है। छाया नामक तृतीय अंक में सीता के हृदय की शुद्धि हो जाती है। चतुर्थ अंक में वाल्मीकि आश्रम में जनक, कौशल्या, वसिष्ठ आदि का आगमन होता है। कौशल्या और जनक का मिलन होता है। वहीं एक क्षत्रिय बालक (लव) को ये देखते हैं। अन्य ब्रह्मचारियों द्वारा रामचन्द्रजी के यज्ञाश्व की सूचना सुनकर वह भाग जाता है। पांचवे अंक में यज्ञाश्व के रक्षक चन्द्रकेतु से लव का वाद-विवाद होता है और वे युद्ध करने के लिए तैयार हो जाते हैं, यद्यपि उनमें एक दूसरे के प्रति प्रेम उमड़ता है। छठे अंक में एक विद्याधर युगल के द्वारा दोनों के युद्ध का वर्णन प्राप्त होता है। इसी बीच रामचन्द्र जी के आ जाने से युद्ध रुक जाता है। कुश भी सूचना पाकर आ जाता है। राम के हृदय में उनके प्रति अत्यन्त प्रेम उमड़ पडता है। परन्तु उन्हें यह ज्ञात नहीं हो पाता कि ये उन्हीं की सन्तान है। सम्मेलन नामक सातवें अंक में गर्भांक नाटक का प्रयोग होता है। वहीं वाल्मीकि की योजना से सीता-राम का मिलन।

अभ्यास प्रश्न2-

1- एक शब्द में उत्तर दीजिएः

- क. महावीरचरित नाटक में कुल कितने अंक है?
- ख. भवभूति के प्रकरण ग्रन्थ का नाम क्या है?
- ग. उत्तररामचरित में अंकों की संख्या कितनी है?
- घ. मालती माधव में कुल कितने अंक हैं?

2- एक वाक्य में उत्तर दीजिएः

- क. पं0 टोडरमल आदि किस नाटक को भवभूति की प्रथम कृति मानते हैं।
- ख. प्रायः सभी आलोचक किस नाटक को भवभूति की अन्तिम कृति मानते हैं।
- ग. भूरिवसु और देवरात क्रमशः किन राज्यों के राजमंत्री थे?
- घ. नन्दन की वहिन मदयन्तिका किसकी सहेली है?

3- निर्देशानुसार उत्तर दीजिएः

क. महावीर चरित में कहाँ तक की घटनाओं का वर्णन हैं?
ख. पुष्पक विमान में विशेषण पद बताइए।
ग. महावीर चरित में रावण के मंत्री का नाम क्या है?
घ. किस अंक में सीता के हृदय की शुद्धि होती है?

4- रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

क. वन में निवास करते समय .... सीता का हरण कराता है।
ख. दुर्मुख नामक दूत से .... विषयक सूचना मिलती है।
ग. राम दण्डकारण्य में प्रवेश कर .... शम्बूक का वध करते हैं।
घ. वाल्मीकि आश्रम में कौशल्या और .... का मिलन होता है।

5- सत्य/असत्य बताइए:

क. राजा मालती और माधव का विवाह कराने को तैयार हैं।
ख. माधव अघोरघण्ट का वध करता है।
ग. कपालकुण्डला मालती को चुराकर विन्ध्य पर्वत पर ले जाती है।
घ. कामन्दकी मालती-माधव का गन्धर्व विवाह कराती है।

6- सही विकल्प छांटकर लिखिए:

उत्तररामचरित के अन्तिम अंक का नाम है-

a. चित्रदर्शन
b. छाया
c. गर्भांक
d. सम्मेलन

1.5 सारांश

भवभूति संस्कृत साहित्य के देदीप्यमान रत्न हैं महत्व की दृष्टि से कालिदास के अनन्तर इन्हें स्थान दिया जाता हैं। उनकी रचनाओं ने संस्कृत साहित्य में एक नवीन आभा प्रदान की है। वे विदर्भ (बरार) के पद्मपुर नगर के निवासी थे। उन्होंने उदुम्बरवंशी ब्राह्मणों के परिवार में जन्म लिया था। ये ब्राह्मण बड़े ही आदरणीय, धर्मनिष्ठ, सोमरस का पान करने वाले और वेद के ज्ञाता थे। इनके बाबा का नाम भट्टगोपाल, पिता का नाम नीलकण्ठ और माता का नाम जतुकर्णी था। इनके गुरु का नाम ज्ञाननिधि था। वे वास्तव में ज्ञान के निधि ही थे। भवभूति को विद्वपैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हुई

थी। समस्त शास्त्रों में उनकी अप्रतिहत गति थी। वाणी अनुचरी की भांति उनका अनुसरण किया करती थी। भवभूति की प्रसिद्धि उनकी तीन रचनाओं के कारण ही रही है। इनमें मालती माधव दस अंकों का प्रकरण है। महावीर चरित और उत्तर रामचरित सात सात अंकों के नाटक हैं। इसके अतिरिक्त उनके कुछ श्लोक यत्र तत्र प्राप्त होते हैं। ये श्लोक उनकी दूसरी कृतियों की कल्पना के लिए बाध्य करते हैं; जैसे- सदुक्ति कर्णामृत में उद्धृत पद्य एवं शार्ङ्.धर पद्धति के कुछ पद्य भवभूति की लुप्त रचना के संकेत देते हैं। फिर भी उनकी तीन रचनाएँ ही उपलब्ध हैं।

1.6 शब्दावली

तटाक -	तालाब
निर्बाध -	बाधारहित
उदुम्बर -	एक ब्राह्मवंश
आहिताग्नि -	ब्राह्मण, जो यज्ञ की पावन अग्नि को अभिमन्त्रित करते हैं।
श्रीकण्ठ -	भवभूति कवि का विशेषण
अध्यवसायी -	दृढ़संकल्प वाला
प्रवर सेन -	सेतुबन्ध महाकाव्य के रचयिता
धर्मनिष्ठ -	धार्मिक
वाग्वैविभूति -	महाकवि की आराध्य शक्ति
शब्दब्रह्मविद् -	वेद का विद्वान्
अरुन्धती -	वसिष्ठ की पत्नी
औपनिषदिक -	उपनिषदों पर आधारित
असूर्या -	सूर्यरहित, प्रकाशहीन
प्रखर बुद्धि -	मेधावी
कूटनीति -	धोखे में डालने वाला मार्ग
अनुष्ठान -	धार्मिक कार्यनिष्पादन

दारुण - कठोर

पद - व्याकरण शास्त्र

वाक्य - तर्कशास्त्र

प्रमाण - न्यायशास्त्र

श्मशान - शवस्थान

तन्त्रसिद्धि - अतिमानव शक्ति प्राप्त करने के लिए मन्त्र-यन्त्र की साधना

सटीक - समुचित, टीका सहित

यज्ञाश्व - यज्ञ का घोड़ा

1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

क. कश्यप
ख. उदुम्बर
ग. तैत्तिरीय
घ. विदर्भ

क. भवभूति ने अपने पांचवे पूर्वज का महाकवि नाम निर्देश किया है
ख. भवभूति ने स्वयं को जतुकर्णीपुत्र लिखा है।
ग. भवभूति के पिता ने इनका नाम श्रीकण्ठ रखा था।
घ. भवभूति नाम की प्रसिद्धि का कारण पार्वती की वन्दना में लिखा श्लोक था।

3- क विलक्षण

ख बाणभट्ट

ग 8वीं शताब्दी

घ 733 ई0

4- क . सत्य

ख सत्य

ग असत्य

घ असत्य

5. भवभूति

अीयास प्रश्न 2

1. क. सात

ख. मालती माधव

ग. सात

घ. दस

2- क. पं0 टोडरमल आदि महावीरचरित को भवभूति की प्रथम कृति मानते है।

ख. प्रायः सभी आलोचक उत्तररामचरित को भवभूति की अन्तिम कृति मानते है।

ग. भूरिवसु और देवरात क्रमशः प0ावती और विदर्भ के राजमन्त्री थे।

घ. नन्दन की वहिन मदयन्तिका मालती की सहेली है।

3- क. महावीर चरित में श्रीरामचन्द्र के राज्याभिषेक तक की घटनाओं का वर्णन है।

ख. विशेषण पद पुष्पक है।

ग. महावीर चरित में रावण के मन्त्री का नाम माल्यवान् है।

घ. छाया नामक तृतीय अंक में सीता के हृदय की शुद्धि होती है।

4- क. माल्यवान

ख. सीतापवाद

ग. शूद्रमुनि

घ. जनक

4- क. असत्य

ख. सत्य

ग. असत्य

घ. सत्य

6- सम्मेलन

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ

1- भवभूति, उत्तररामचरितम्, व्याख्या- डॉ0 कृष्णकान्त शुक्ल; (1986-87)
साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ-2

2- भवभूति, उत्तररामचरितम्; व्याख्या- आचार्य प्रभुदत्त स्वामी (1988)
ज्ञान प्रकाशन, मेरठ-2

1.9 सहायक पाठ्य सामग्री

1- डा. दयाशंकर तिवारी, भवभूति के नाटकों की ध्वनि सिद्धान्त परक समीक्षा, 2009,
विद्यानिधि प्रकाशन, खजूरी खास, दिल्ली-94

2- भवभूति, मालतीमाधवम्, व्याख्या-डॉ0 गंगासागर राय, (2002)
चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी-1

1.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1- भवभूति के जीवनवृत्त, समय और पाण्डित्य को स्पष्ट कीजिए।

2- मालती माधव के कथानक का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

3- महावीर चरित की कथावस्तु का विवेचन कीजिए।

4- उत्तररामचरित की कथावस्तु का विश्लेषण कीजिए।